NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

हिंदी गद्य साहित्य

B.H.D.C.-134

B.A. General - 4th Semester

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain* M.A. (Hindi), B.Ed.

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

हिंदी गद्य साहित्य

Question Paper–June-2023 (Solved) 1-4

Question Paper–December-2022 (Solved) 1-2

Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2

Sample Question Paper–1 (Solved) 1-2

Sample Question Paper–2 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

हिंदी गद्य का स्वरूप और विकास

1. हिंदी गद्य का विकास 1

2. हिंदी गद्य की विविध विधाएं 12

हिंदी उपन्यास एवं कहानी

3. जैनेन्द्र कुमार और उनका उपन्यास साहित्य 25

4. 'त्यागपत्र' की अंतर्वस्तु और विश्लेषण 35

5. 'नमक का दारोगा' का वाचन 48

6. 'नमक का दारोगा' की कथावस्तु और विश्लेषण 58

7. 'आकाशदीप' का वाचन 71

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

8. 'आकाशदीप' की अंतर्वस्तु और विश्लेषण 82

9. 'वापसी' (उषा प्रियंवदा) : वाचन 94

10. 'वापसी' कहानी की कथावस्तु और मूल्यांकन 102

हिंदी निबंध

11. रामचंद्र शुक्ल और उनका निबंध साहित्य 109

12. 'लोभ और प्रीति' की अंतर्वस्तु और विश्लेषण 116

13. हजारी प्रसाद द्विवेदी और उनके निबंध 126

14. 'कुटज' की अंतर्वस्तु और विश्लेषण 134

15. 'सहस्र फणों का मणि-द्वीप' (कुबेरनाथ राय) की अंतर्वस्तु और विश्लेषण 145

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

हिंदी गद्य साहित्य

B.H.D.C.-134

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्ही तीन की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

(क) विवाह भावुकता का प्रश्न नहीं, व्यवस्था का प्रश्न है। वह प्रश्न क्या यों टाले टल सकता है? वह गांठ है जो बंधी कि खुल नहीं सकती, टूटे तो टूट भले ही जाए। लेकिन टूटना कब किसका श्रेयस्कर है? पर आठवीं कक्षा का विद्यार्थी मैं यह सब नहीं जानता था। इसलिए उस समय अति-संपूर्ण भाव से मैंने बुआ को आश्वासन दे दिया कि वह अब इसी घर में रहेंगी। देखूँ कौन फूफा होते हैं जो ले जाएं। ऐसा मन न करो, बुआ। फिकर क्या है। यह प्रमोद बड़ा होकर खूब कमाएगा और तुम्हारी खूब सेवा करेगा और तुम्हें कुछ कष्ट न होने देगा।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश जैनेन्द्र के उपन्यास 'त्यागपत्र' से उद्धृत है। प्रमोद मृणाल का भतीजा है। जब मृणाल का विवाह हुआ, वह आठवीं कक्षा में था। मृणाल के वापस मायके आने पर प्रमोद उन्हें वापस न जाने और उनकी सेवा करने का आश्वासन देता है, क्योंकि वह विवाह का अर्थ नहीं जानता था। बड़ा होकर वह इस स्थिति पर विचार करता है और कहता है कि

व्याख्या–हमारे समाज में विवाह भावुकता की अपेक्षा व्यवस्था का प्रश्न है अर्थात् भले ही विवाह में पति-पत्नी के बीच प्रेम, स्नेह, भावुकता न हो, किंतु सामाजिक व्यवस्था के निर्वाह के लिए उन्हें विवाह का बंधन बनाए रखना पड़ता है। विवाह वह बंधन है, जो टूट तो सकता है, किंतु उसे छोड़ा नहीं जा सकता, परंतु यह टूटना भी उचित नहीं है, यह आठवीं कक्षा का विद्यार्थी नहीं समझ सकता। इसी कारण प्रमोद ने मृणाल के मायके वापस आने पर उसे आश्वासन दिया कि वह अब इसी घर में रहेंगी। वह फूफा के संग उन्हें नहीं जाने देगा। उसने कहा–आपका भतीजा बड़ा होकर खूब पैसा कमाएगा और आपकी सेवा करेगा। आपको सदैव प्रसन्नता एवं सुख देगा।

विशेष–1. सामाजिक स्थिति का चित्रण है, जिसमें स्त्री को हर हाल में बंधन को निभाना पड़ता है।

2. बाल मनोविज्ञान का चित्रण है।

3. स्नेहपूर्ण संबंधों में व्यक्ति अपने स्नेहीजन का दुख नहीं देख सकता।

4. भाषा बोलचाल की है।

5. शैली चिंतनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है।

(ख) सभी लोग विस्मित हो रहे थे। इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया? बल्कि इसलिए कि वह कानून के पंजे में कैसे आये। ऐसा मनुष्य जिसके पास असाध्य साधन करने वाला धन और अनन्य वाचालता हो, वह क्यों कानून के पंजे में आये। प्रत्येक मनुष्य उनसे सहानुभूति प्रकट करता था। बड़ी तत्परता से इस आक्रमण को रोकने के निमित्त वकीलों की एक सेना तैयार की गई। न्याय के मैदान में धर्म और धन का युद्ध ठन गया। वंशीधर चुपचाप खड़े थे। उनके पास सत्य के सिवा न कोई बल था, न स्पष्ट भाषण के अतिरिक्त कोई वस्त्र, गवाह थे, किंतु लोभ से डावांडोल।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचंद की कहानी 'नमक का दारोगा' से उद्धृत है। दारोगा वंशीधर अलोपीदीन को नमक की तस्करी में गिरफ्तार कर लेता है। अलोपीदीन धनी एवं चालाक व्यापारी है। धन केवल पर वह सदैव कानून से बच जाता है, किंतु इस बार पकड़े जाने पर लोग हैरान होते हैं। इसी का वर्णन इन पंक्तियों में किया गया है।

व्याख्या–सभी लोग अलोपीदीन की गिरफ्तारी पर हैरान थे। लोगों को हैरानी अपोलीदीन के तस्करी जैसे गैर-कानूनी कर्म करने पर नहीं, बल्कि उनके पकड़े जाने पर हो रही थी। लोगों के मन में सवाल था कि ओलोपीदीन जैसा व्यक्ति कानून के चुंगल में कैसे फंस गया। अलोपीदीन के पास धन का बल है, जिससे कानून के रक्षक खरीदे जा सकते हैं और बोलने की कुशलता भी है, जो किसी को भी अपनी बातों से संतुष्ट कर सकती है। यह सब होते हुए भी वे कानून की पकड़ में कैसे आ गए। इस कारण लोगों को उनसे सहानुभूति थी। अलोपीदीन को बचाने के लिए उनके धन से प्रभावित लोगों ने तुरंत अनेक वकील खड़े कर दिए। इस प्रकार न्याय के क्षेत्र में धर्म और धन में युद्ध छिड़ गया। वंशीधर ईमानदार व्यक्ति थे। उनके पास सच्चाई और नैतिकता के अतिरिक्त कोई

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

बल या शस्त्र नहीं था। जो गवाह थे, वे अलोपीदीन के धन के प्रभाव में थे।

विशेष–1. सरकारी विभागों में व्याप्त भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया गया है।

2. लोगों की कुंठित मानसिकता पर प्रहार किया है कि आज लोग गलत काम करने वाले आदमी के कानून की गिरफ्त में आने पर उससे सहानुभूति रखते हैं।

3. भाषा चित्रात्मक एवं बोधगम्य है।

(ग) चंपा ने उसके हाथ पकड़ लिए। किसी आकस्मिक झटके ने एक पलभर के लिए दोनों के अधरों को मिला दिया। सहसा चैतन्य होकर चंपा ने कहा–'बुद्धगुप्त! मेरे लिए सब भूमि मिट्टी है, सब जल तरल है, सब पवन शीतल है। कोई विशेष आकांक्षा हृदय में अग्नि के समान प्रज्ज्वलित नहीं। सब मिलाकर मेरे लिए एक शून्य है। प्रिय नाविक! स्वदेश लौट जाओ, वैभवों का सुख भोगने के लिए और मुझे छोड़ दो इन निरीह भोले-भाले प्राणियों के दु:ख की सहानुभूति और सेवा के लिए'।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश कहानी 'आकाशदीप' से लिया गया है। इसके लेखक जयशंकर प्रसाद हैं। इस कहानी में प्रसाद जी ने निर्जन द्वीप पर जलदस्यु बुद्धगुप्त और चम्पा के आचरण एवं व्यवहार में परिवर्तन दिखाया है। जब बुद्धगुप्त चम्पा के साथ परिणय के बाद स्वदेश वापसी के लिए कहता है, तो वह कहती है कि मैं इन्हीं आदिवासियों के साथ जीना चाहती हूँ। मेरी सुख-भोग में कोई रुचि नहीं है। वह कहती है कि

व्याख्या–चंपा ने भाव विह्वल होकर बुद्धगुप्त के हाथ पकड़ लिए और इसी भावुकता में दोनों के अधर आपस में मिल गए। हे बुद्धगुप्त! मेरे लिए सब सांसारिक सुख-सुविधाएं मिट्टी के समान हैं। सारा जल सागर के समान तरल है, जिसमें कहीं भी ठहराव नहीं है। समस्त प्रवाहित हवाएं शीतल हैं अर्थात् सुखमय हैं। अब मेरे हृदय में आग की तरह कोई जलती हुई इच्छा शेष नहीं है। अर्थात मैं कुछ नहीं चाहती। मेरे लिए सम्पूर्ण दुनिया शून्य है, अर्थहीन है। अत: हे प्रिय नाविक! मैं चाहती हूँ कि तुम अपने देश भारत वापस चले जाओ और वहां जाकर सुविधाओं का सुख पाओ। मुझे यहीं इन कमजोर और गरीब लोगों के दु:खों में सहभागी बनने के लिए छोड़ दो। मैं चाहती हूँ कि इन गरीबों की सेवा करूँ।

विशेष–1. चम्पा के हृदय की उदारता का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है।

2. सहानुभूति और सेवा को मानवता का महान् गुण माना गया है।

3. भाषा में दार्शनिकता का पुट है।

4. तत्सम शब्दों का काव्यात्मक प्रयोग है।

5. शैली वर्णनात्मक, सहज और सरल है।

(घ) गजाधर बाबू ने चाहा था कि वह भी इस मनोविनोद में भाग लेते, पर उनके आते ही जैसे सब कुण्ठित हो चुप हो गए। उससे उनके मन में थोड़ी-सी खिन्नता उपज आई। बैठते हुए बोले, ''बसन्ती, चाय मुझे भी देना। तुम्हारी अम्मा की पूजा अभी चल रही है क्या?'' बसन्ती ने माँ की कोठरी की ओर देखा, ''अभी आती ही होंगी'' और प्याले में उनके लिए चाय छानने लगी। बहू चुपचाप पहले ही चली गयी थी, अब नरेन्द्र भी चाय का आखिरी घूंट पीकर उठ खड़ा हुआ, केवल बसन्ती, पिता के लिहाज में, चौके में बैठी मां की राह देखने लगी।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश उषा प्रियवंदा की कहानी 'वापसी' से उद्धृत है। गजाधर बाबू 35 वर्ष नौकरी करने के बाद सेवानिवृत्त होकर अपने घर आते हैं, किंतु उनके परिवार वाले उनके साथ सहज नहीं हो पाते, वे उन्हें देखकर चुप हो जाते हैं या उनसे बचते हैं। ऐसे ही एक दिन रविवार को उनके बच्चे आपस में हंसी-मजाक कर रहे थे, गजाधर बाबू भी उनके साथ शामिल होना चाहते थे, किंतु बच्चों ने उन्हें उपेक्षित कर दिया, इससे वे खिन्न हो गए। इसी स्थिति का यहां वर्णन है।

व्याख्या–गजाधर बाबू सुबह घूमकर आए। रविवार की छुट्टी थी, उनके बेटे-बहू और बेटी के कमरे में हंसी-मजाक की आवाज सुनकर गजाधर बाबू भी वहां चले गए। उनकी इच्छा थी कि वे भी बच्चों के हंसी-विनोद में भाग लें, किंतु जब वे कमरे में गए और बच्चों से हंसकर पूछने लगे, तो बच्चे उन्हें देखकर चुप हो गए, इससे गजाधर बाबू के मन में खिन्नता आ गई। उन्होंने बसंती से चाय लाने को कहा और अपनी पत्नी के बारे में पूछा कि क्या वह पूजा कर रही है। बसंती ने अपनी मां के कमरे की ओर देखकर कहा कि अभी आने वाली होगी, फिर वह अपने पिता के लिए चाय छानने लगी। बहू कमरे से चली गई थी। नरेन्द्र भी चाय पीकर चला गया, किंतु बसंती केवल पिता के लिहाज से बैठी रही और मां की राह देखने लगी।

विशेष–1. वर्तमान में परिवार में बढ़ती टूटन एवं अलगाव को दिखाया गया है।

2. भाषा सहज एवं सरल है।

(ङ) लोभ का सबसे प्रशस्त रूप वह है, जो रक्षा मात्र की इच्छा का प्रवर्तक होता है, जो मन में यही वासना उत्पन्न करता है कि कोई चीज बनी रहे, चाहे वह हमारे किसी उपयोग में आए या न आए। इस लोभ में दोष का लेश उसी अवस्था में आ सकता है, जबकि वह वस्तु ऐसी हो जिससे किसी को कोई बाधा या हानि पहुंचती हो। कोई सुंदर कृष्णसार मृग नित्य आकर खेती की हानि किया करता है। उसके सौंदर्य पर मुग्ध होकर उसकी रक्षा चाहने वाला यदि बराबर रक्षा में प्रवृत्त रहेगा तो बहुतों से उसकी अनबन हो सकती है।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंध 'लोभ और प्रीति' से उद्धृत है। इन पंक्तियों में यह स्पष्ट किया

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

हिंदी गद्य साहित्य

हिंदी गद्य का स्वरूप और विकास

हिंदी गद्य का विकास

1

परिचय

हिंदी साहित्य का इतिहास काफी पुराना है। ऐसा माना जाता है कि हिंदी साहित्य का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है। हिंदी साहित्य के इतिहास को सामान्यत: चार भागों में बांटा जा सकता है–आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिक काल। हिंदी गद्य का विकास आधुनिक काल में हुआ। हिंदी गद्य के विकास में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा प्रेमचन्द का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आधुनिक काल से पूर्व का साहित्य अधिकांशत: पद्य में ही है। हिंदी गद्य के विकास में भारतेन्दु तथा प्रेमचन्द के अतिरिक्त अन्य लेखकों का भी योगदान रहा है।

प्रस्तुत अध्याय हिंदी गद्य के विकास से संबंधित है। अध्याय में निम्नलिखित विषयों की जानकारी दी गई है–गद्य साहित्य, हिंदी गद्य की पृष्ठभूमि, ब्रजभाषा गद्य, खड़ी बोली गद्य, हिंदी गद्य का विकास, हिंदी गद्य के विकास के कारण, प्रारंभिक गद्य लेखन, अंग्रेजों की भाषा नीति, भारतेन्दु युग (1875-1900), द्विवेदी युग (1900-1920) तथा प्रेमचन्द और उनके बाद।

अध्याय का विहंगावलोकन

गद्य साहित्य

साहित्यिक भाषा में कबीरदास, सूरदास तथा मीरा की रचनाओं को काव्य या पद्य कहा जाता है, जबकि उपन्यास, कहानी एवं निबंध को हम गद्य कह सकते हैं। काव्य में गेयता तथा लय होती है, जबकि गद्य की भाषा व्याकरण के अनुरूप होती है। काव्य रचना आरंभ से ही साहित्य का महत्त्वपूर्ण भाग रही है। भारत में जहां 'रामायण' और 'महाभारत' जैसे महाकाव्यों की रचना हुई, वहीं यूनान में 'इलियड' तथा 'औडेसी' जैसे महाकाव्यों की रचना हुई। नाटकों में भी काव्य की भाषा का ही अधिक प्रयोग हुआ है। प्रश्न यह उठता है कि आधुनिक युग से पूर्व साहित्यिक रचनाएं गद्य की बजाय पद्य में ही क्यों होती रहीं?

इसका कारण यह था कि काव्य को याद रखना अधिक सरल था और मौखिक परंपरा से साहित्य को आगे बढ़ाने में काव्य की भाषा अधिक सहायक थी।

हिंदी गद्य की पृष्ठभूमि

19वीं शताब्दी से पूर्व हिंदी भाषा में गद्य में रचनाएं अधिक नहीं थीं। 16वीं तथा 17वीं सदी में साहित्य में खड़ी बोली का प्रयोग बहुत कम हुआ, क्योंकि इस समय ब्रज भाषा साहित्य की भाषा थी। काफी समय तक साहित्य की रचना ब्रज भाषा में ही होती रही।

ब्रजभाषा गद्य

चूँकि ब्रजभाषा साहित्यिक भाषा थी, इसलिए इस भाषा के बोलचाल रूप का प्रयोग भी साहित्य में होता था। विद्वानों की भाषा जनसाधारण की भाषा से अलग होती है। जनसाधारण की भाषा बोलचाल की भाषा होती है। गद्य के द्वारा लेखक अपना संदेश जनता तक आसानी से पहुँचा सकता है। काव्य ग्रंथों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए टीकाएं लिखी गई हैं। ये टीकाएं भी गद्य में ही लिखी गई हैं। पद्य लेखन के साथ-साथ गद्य का लेखन भी होता रहा।

खड़ी बोली गद्य

खड़ी बोली जनसाधारण के बोलचाल की भाषा थी। धीरे-धीरे गद्य की रचनाएं भी इसमें होने लगीं। खड़ी बोली के विकास में तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का भी योगदान रहा। 14वीं शताब्दी में खड़ी बोली दिल्ली तथा उसके आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाने लगी थी। मुगलकाल में जनता से सम्पर्क साधने के लिए भी खड़ी बोली का ही उपयोग किया गया। मुगलों ने फारसी

www.neerajbooks.com

भाषा को राजकाज की भाषा बताया। खड़ी बोली तथा फारसी के मिश्रण से एक नई भाषा-शैली का जन्म हुआ। इस नई शैली को हिन्दवी या उर्दू नाम दिया गया। 14वीं शताब्दी में अमीर खुसरो ने खड़ी बोली में अनेक पहेलियों और मुकरियों की रचना की।

हिंदी गद्य का विकास

खड़ी बोली के विकास में परिस्थितियों, संस्थाओं तथा व्यक्तियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

हिंदी गद्य के विकास के कारण

अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना के साथ भारत में जो परिवर्तनों का सिलसिला प्रारंभ हुआ, उनमें से कुछ परिवर्तनों का संबंध हिंदी गद्य के विकास से भी है।

ईसाई मिशनरियाँ–अंग्रेजों के साथ भारत में ईसाई धर्म प्रचारक भी आये। अंग्रेजी शासन की स्थापना के साथ ईसाई धर्म प्रचारकों की गतिविधियां भी तेज हो गईं। 19वीं शताब्दी में ईसाई धर्म प्रचारकों ने ईसाई धर्म के प्रचार के लिए हिंदी गद्य में अनेक पुस्तकें तैयार करवाईं।

नवीन आविष्कार–भारत में अपने साम्राज्य को सुदृढ़ बनाने के लिए अंग्रेजों ने मुद्रण, यातायात तथा संचार के साधनों का प्रयोग किया। इनसे जनसामान्य के जीवन में बड़ा परिवर्तन आया।

शिक्षा का विस्तार–1935 से पूर्व भारत में शिक्षा संस्कृत और फारसी भाषा में दी जाती थी। राजा राममोहन राय ने अंग्रेजी शिक्षा का समर्थन किया। अंग्रेजी शिक्षा का भारतीयों को लाभ भी हुआ। अंग्रेजी शिक्षा से भारतीयों को पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति की जानकारी प्राप्त हुई, इससे भारतीयों में एक नई चेतना जाग्रत हुई।

समाज-सुधार आन्दोलन–सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए समाज सुधारकों ने जनता की भाषा में अपने मत का प्रचार किया। राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज के द्वारा अपने मत का प्रचार किया। स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'आर्य समाज' की स्थापना की। स्वामी दयानंद ने अपने ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना गद्य में ही की। श्रद्धाराम फिल्लौरी तथा नवीनचन्द्र राय ने भी समाज सुधार के लिए हिंदी गद्य का ही सहारा लिया।

हिंदी गद्य

पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन–पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन मुद्रण की सुविधा के कारण सरल हो गया। 'उदत मार्तंड' 1826 में पंडित जुगलकिशोर द्वारा प्रकाशित हिंदी का पहला समाचार-पत्र था। या साप्ताहिक पत्र था। इस पत्र से हिंदी गद्य में नवयुग आरम्भ हुआ। इसके बाद 1829 में 'बंगदूत' नामक पत्र कलकत्ता से निकलने लगा और 1834 में 'प्रजाहितैषी' नामक तीसरा पत्र प्रकाशित होने लगा। हिंदी भाषी क्षेत्र में पहला पत्र राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिंद' द्वारा प्रकाशित 'बनारस' था। इसके बाद अन्य अनेक पत्र प्रकाशित होते रहे।

प्रारम्भिक गद्य लेखन

1800 में कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना हुई। 1803 में इसके हिंदी-उर्दू अध्यापक जॉन ग्रिलक्राइस्ट ने हिंदी और उर्दू की पुस्तकों के लेखन का प्रयास शुरू किया। उन्होंने कई भाषा-मुंशियों की नियुक्ति की।

भाषा मुंशी सदासुखलाल 'नियाज' उर्दू और फारसी के अच्छे लेखक और कवि थे। उन्होंने 'सुखसागर' की रचना की और विष्णु पुराण के आधार पर एक अपूर्ण ग्रन्थ भी रचा। इनकी भाषा सहज और स्वाभाविक है। 1798 और 1803 के बीच मुंशी इंशाअल्लाह खां ने 'उदयभान चरित' या रानी केतकी की कहानी' की रचना की। इनका संकल्प था कि इनकी भाषा अरबी, फारसी, तुर्की (बाहरी बोली), ब्रजभाषा, अवधी (गँवारी) और संस्कृत शब्दों के मेल (भाखापन) से मुक्त रखेंगे। इनकी वाक्य संरचना पर फारसी का स्पष्ट प्रभाव है।

लल्लूलाल जी ने भागवत के दशम स्कंध के आधार पर 'प्रेमसागर' रचा। इसकी भाषा ब्रजभाषा से प्रभावित है।

कहीं-कहीं अरबी-फारसी के शब्द भी प्रयोग किए हैं। पं. सदल मिश्र ने 'नासिकेतोपाख्यान' की रचना की। इनकी भाषा पर पूरबी बोली का प्रभाव अधिक दिखता है।

अंग्रेजों की भाषा नीति

अंग्रेजो के आगमन के बाद प्रशासन की भाषा फारसी के स्थान पर अंग्रेजी होने लगी। फारसी के प्रयोग में आम जनता की परेशानी देखते हुए 1836 में संयुक्त प्रान्त में अदालतों की भाषा हिंदी कर दी गई, किंतु विरोध के कारण 1837 में अदालतों की भाषा उर्दू कर दी गई।

राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिंद' शिक्षा विभाग में इंस्पेक्टर थे और हिंदी के पक्षधर थे। सरकारी विभागों में हिंदी को उर्दू की अपेक्षा गंवारू माना जाता था। सितारेहिंद ने ठेठ हिंदी का सहारा लिया और उसमे अरबी-फारसी के शब्दों का भी प्रयोग किया। इन्होंने पाठ्यक्रम संबंधी पुस्तकें लिखने के साथ पंडित श्रीलाल और पंडित वंशीधर को भी पुस्तक-लेखन में लगाया। 'राजा भोज का सपना' कहानी सितारेहिंद की सरल और बोलचाल की हिंदी का उदाहरण है।

राजा लक्ष्मनसिंह ने हिंदी और उर्दू को दो अलग-अलग भाषाएँ माना। उन्होंने कालिदास के कई ग्रंथों का अनुवाद भी किया। इन्होने अपनी भाषा से हिंदी गद्य को समृद्ध किया। इन्होने संस्कृतनिष्ठ हिंदी को आगे बढ़ाया और 1841 में 'प्रजाहितैषी' नामक पत्र निकाला।

इनके बाद भारतेंदु ने युग प्रवर्तक की भूमिका निभाते हुए हिंदी गद्य को एक नई दिशा दी। हिंदी गद्य के विकास में पुस्तकें लिखकर और अंग्रेजी से अनुवाद कर रामप्रसाद त्रिपाठी, मथुराप्रसाद मिश्र, ब्रजवासी दास, बिहारीलाल चौबे, शिवशंकर, काशीनाथ खत्री, रामप्रसाद दुबे आदि ने योगदान दिया। स्वामी दयानंद के

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

'सत्यार्थ प्रकाश' को हिंदी में लिखने और आर्य समाज के सहयोग से पंजाब में हिंदी और संस्कृत को नया जीवन मिला। साथ ही नवीनचंद्र राय और श्रद्धाराम फिल्लौरी ने हिंदी को बढ़ाने, ईसाई धर्म का प्रभाव कम करने और धार्मिक व सामजिक जाग्रति फैलाने में सहयोग दिया।

भारतेंदु युग (1875-1900)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म 2 सितम्बर, 1850 ई. को बनारस में हुआ था। इनके पिता गोपालचन्द्र साहित्य के प्रेमी थे। इन्होंने 'नहुष वध' नाटक की रचना की थी। अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतेन्दु ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। इन्होंने 'कविवचन सुधा', 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' तथा 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' नामक पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। भारतेन्दु ने खड़ी बोली के गद्य को परिमार्जित रूप में प्रस्तुत किया। निबंध, नाटक तथा समालोचना आदि में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने एक नयी परंपरा का सूत्रपात किया। इनकी रचनाएं शृंगार, देशभक्ति, ईश्वर-भक्ति तथा सामाजिक अवस्था को दर्शाती हैं। 35 वर्ष की अल्पायु में 1885 में उनकी मृत्यु हो गयी। भारतेन्दु 'निज भाषा' के विकास के पक्षधर थे।

इस काल में नाटक, निबंध तथा उपन्यास आदि विधाओं के प्रारंभ से हिंदी गद्य के विकास को पर्याप्त बल मिला। भारतेन्दु युग के लेखकों में कुछ कर गुजरने की ललक थी। भारतेन्दु युग में काव्य की भाषा ब्रजभाषा ही बनी रही।

द्विवेदी युग

भारतेंदु जैसे प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति के कारण हिंदी गद्य के विकास में गति आई। उनकी प्रेरणा से लेखकों की एक मंडली तैयार हो गई। इस मंडली के लेखों ने हिंदी गद्य को समृद्ध किया था। अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों ने भी हिंदी में लेखन कार्य किया था। हिंदी के प्रचार-प्रसार पर इस युग के लेखकों की दृष्टि अधिक थी, अत: इनकी भाषा में त्रुटियाँ नजर आती हैं। भारतेंदु मंडल के लेखकों में भी भाषागत दोष थे। भाषा बिगड़ने का एक और कारण हिंदी के उन पाठकों की संख्या बढ़ना था, जो अनूदित उपन्यास पढ़ने में रुचि रखते थे, लेकिन अन्य भाषाओं से हिंदी में अनुवाद करने वालों ने इस भाषा की अच्छी जानकारी प्राप्त करना आवश्यक नहीं समझा और उन्होंने शब्दकोश से अर्थ लगाकर ही अनुवाद का कार्य शुरू कर दिया। भाषा में व्याप्त इस अराजकता को अनुशासनबद्ध करने का महती कार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किया।

'सरस्वती' पत्रिका का योगदान

पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सन् 1900 में 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से भाषा के परिमार्जन का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। सन् 1903 से इसके संपादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी बनाए गए और वे द्विवेदी जी 'सरस्वती' पत्रिका के सन् 1920 तक संपादक रहे। 'सरस्वती' का हिंदी गद्य के विकास में ही नहीं आधुनिक हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में भी योगदान है। 'सरस्वती' को द्विवेदी जी के संपादन में सर्वाधिक प्रतिष्ठा मिली। द्विवेदी जी के संपादकत्व में 'सरस्वती' ने बीसवीं शती के आरंभिक दो दशकों के प्रतिनिधि साहित्य को प्रस्तुत करने हेतु मंच प्रदान किया। 'सरस्वती' ने ज्ञान-विज्ञान के नए-नए क्षेत्रों में प्रवेश कर हिंदी में भी जटिल-से-जटिल विषयों को प्रस्तुत करने की क्षमता को प्रमाणित किया। 'सरस्वती' ने हिंदी गद्य को गद्य की सभी विधाओं से संपन्न बनाने का महत्त्वपूर्ण प्रयत्न किया। 'सरस्वती' ने हिंदी गद्य को परिनिष्ठित रूप देकर अनगढ़पन और अराजकता को समाप्त कर एकरूपता प्रदान की। 'सरस्वती' ने हिंदी गद्य और पद्य की भाषा के द्वंद्व को समाप्त किया।

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी (1861-1938) स्वयं कवि थे, किंतु उन्हें कवि के रूप में उतनी प्रतिष्ठा नहीं मिली, जितनी अपने निबंध और समालोचनाओं के कारण मिली। द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' में प्रकाशन के लिए आने वाली रचनाओं की भाषाओं को सुधारकर परिमार्जित और एकरूप करने जैसा बड़ा कार्य किया। द्विवेदी जी भाषा के प्रति बहुत सजग रहते थे और उनकी कोशिश रहती थी कि खड़ी बोली हिंदी अपना मानक रूप ग्रहण करे। द्विवेदी जी ने उस युग की राष्ट्रीय चेतना और नवजागरण की भावना को पूरी तरह आत्मसात कर उसे ही हिंदी साहित्य के लिए आदर्श मानते थे। उन्होंने साहित्य के रीतिकालीन भावबोध और कलारूपों को अस्वीकार किया और अपने युग और समाज के अनुकूल साहित्य रचने की प्रेरणा लेखकों में जगायी। उन्होंने साहित्य को समाज से जोड़ा। महावीरप्रसाद द्विवेदी की 'सरस्वती' के माध्यम से प्रेमचंद, मैथिलीशरण गुप्त, माधवप्रसाद मिश्र, बालमुकुंद गुप्त, नाथूराम शर्मा 'शंकर', अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', रामचंद्र शुक्ल, पद्मसिंह शर्मा जैसे लेखकों को ख्याति मिली और जनता तक उनका महत्त्वपूर्ण साहित्य पहुँचा।

द्विवेदी युग में उपन्यास, कहानी, निबंध और आलोचना के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण काम हुआ। इसी युग में इन विधाओं का अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व बना और इसी स्वतंत्र व्यक्तित्व की नींव पर बाद में इन गद्य विधाओं ने महान् साहित्यकार और महान् रचनाएँ दीं।

प्रेमचंद और उनके बाद

द्विवेदी युग में भाषा के परिमार्जन का महत्त्वपूर्ण कार्य किया गया। द्विवेदी युग के बाद गद्य साहित्य को प्रेमचन्द ने एक नई दिशा दी। प्रेमचन्द के उपन्यासों तथा कहानियों में नवीनता दिखाई देती है। प्रेमचन्द ने उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध तथा जीवनियों के अतिरिक्त अनुवाद का कार्य भी किया। प्रेमचन्द ने लगभग 300 कहानियों की रचना की। प्रेमचन्द ने समाज एवं परिवार की किसी-न-किसी समस्या को ही अपनी कहानियों का आधार बनाया है। प्रेमचन्द की श्रेष्ठ कहानियां हैं–'ईदगाह', 'कफन', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'पूस की रात', 'बड़े घर की बेटी', 'पंचपरमेश्वर', 'नमक का दरोगा', 'दूध का दाम आदि। उपन्यास के क्षेत्र में अपनी उच्चकोटि की रचनाओं के कारण प्रेमचन्द को उपन्यास सम्राट कहा गया। 'गोदान', 'गबन', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', तथा 'निर्मला' उनके श्रेष्ठ उपन्यास हैं। प्रेमचन्द युग में तथा उसके

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

बाद भी उपन्यास-साहित्य को समृद्ध करने वाले उपन्यासकार थे–जयशंकर प्रसाद, चतुरसेन शास्त्री, विश्वंभरनाथ शर्मा, इलाचन्द्र जोशी, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, भगवतीचरण वर्मा, उपेन्द्रनाथ अश्क, जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल, नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा अमृतलाल नागर। इस युग में निबंध, आलोचना, नाटक आदि के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन एवं सुधार आए।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. आधुनिक काल से पूर्व साहित्य की रचना काव्य में होती थी। नीचे इसके विभिन्न कारण बताए गए हैं। सही कारण के सामने (√) का और गलत के आगे (×) निशान लगाइए–

(i) काव्य में गेयता होती है, इससे उसको याद रखना आसान होता है।
(ii) आधुनिक युग से पूर्व मुद्रण की आधुनिक प्रणाली का विकास नहीं हुआ था।
(iii) काव्य अभिव्यक्ति का सबसे अक्षम रूप है।
(iv) आधुनिक युग से पूर्व पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आरंभ नहीं हुआ था।

उत्तर–*(i)* √, *(ii)* √, *(iii)* ×, *(iv)* √

प्रश्न 2. ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली को गद्य भाषा के रूप में स्वीकार किया गया, क्योंकि (सही विकल्प के सामने (√) का चिह्न लगाइए)।

(i) खड़ी बोली संपर्क भाषा के रूप में हिंदी क्षेत्र में व्यवहृत होने लगी थी।
(ii) ब्रजभाषा काव्य की भाषा थी।
(iii) पद्य और गद्य की भाषा अलग-अलग होती है।
(iv) खड़ी बोली को राज्याश्रय प्राप्त था।

उत्तर–*(i)* खड़ी बोली संपर्क भाषा के रूप में हिंदी क्षेत्र में व्यवहृत होने लगी थी।

प्रश्न 3. नीचे कुछ पुस्तकों के नाम दिए गए हैं, इनकी भाषा का नाम लिखिए।

(i) दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता
(ii) भाषा योग वासिष्ठ
(iii) अष्टयाम
(iv) चंद छंद बरनन की महिमा

उत्तर–*(i)* ब्रजभाषा, *(ii)* खड़ी बोली, *(iii)* ब्रजभाषा, *(iv)* खड़ी बोली।

प्रश्न 4. नीचे हिंदी गद्य के विकास के कुछ कारण बताए गए हैं, इनमें से एक कारण सही नहीं है, बताइए।

(i) ईसाई धर्म प्रचारकों का योगदान
(ii) मुद्रण प्रणाली की शुरुआत
(iii) अंग्रेज सरकार का विशेष संरक्षण
(iv) पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन

उत्तर–*(iii)* अंग्रेज सरकार का विशेष संरक्षण।

प्रश्न 5. राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद–

(i) उर्दू मिश्रित हिंदी के पक्षधर थे।
(ii) संस्कृतनिष्ठ हिंदी के पक्षधर थे।
(iii) ब्रजभाषा मिश्रित हिंदी के पक्षधर थे।
(iv) फारसी के पक्षधर थे।

उत्तर–*(i)* उर्दू मिश्रित हिंदी के पक्षधर थे।

प्रश्न 6. 'उदंत मार्तण्ड' के प्रकाशन का उद्देश्य था–

(i) अधिक धन कमाना
(ii) जनता की भाषा में जनता से संवाद बनाना
(iii) अंग्रेजी का विरोध करना
(iv) हिंदी साहित्य का प्रचार करना

उत्तर–*(ii)* जनता की भाषा में जनता से संवाद बनाना।

प्रश्न 7. निम्नलिखित लेखकों में से किसकी भाषा को आधुनिक हिंदी गद्य के सर्वाधिक नजदीक बताया गया है।

(i) इंशाअल्ला खां
(ii) मुंशी सदासुखलाल
(iii) लल्लूलाल
(iv) जॉन गिलक्राइस्ट

उत्तर–*(ii)* मुंशी सदासुखलाल।

प्रश्न 8. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर 'हां' या 'नहीं' में दीजिए।

(i) मुंशी सदासुखलाल फोर्ट विलियम कॉलेज से संबद्ध रहे। (हाँ/नहीं)
(ii) राजा लक्ष्मणसिंह संस्कृतनिष्ठ हिंदी के समर्थक थे। (हाँ/नहीं)
(iii) राजा शिवप्रसाद ने 'रघुवंश' का अनुवाद किया। (हाँ/नहीं)
(iv) श्रद्धाराम फुल्लौरी ने 'भाग्यवती' उपन्यास की रचना की। (हाँ/नहीं)

उत्तर–*(i)* नहीं, *(ii)* हाँ, *(iii)* नहीं, *(iv)* हाँ।

प्रश्न 9. भारतेंदु हरिश्चन्द्र के योगदान को व्यक्त करने वाली बातें नीचे के वाक्यों में कहीं गई है। उनमें से एक बात सही नहीं है, बताइए।

(i) भारतेंदु ने हिंदी गद्य को साहित्यिक संस्कार दिया।
(ii) भारतेंदु ने गद्य की नयी विधाओं में लेखन को प्रोत्साहित किया।
(iii) भारतेंदु ने लेखन को आधुनिक चेतना से जोड़ा।
(iv) भारतेंदु ने कई कहानियों की रचना की।

उत्तर–*(iv)* भारतेंदु ने कई कहानियों की रचना की।

प्रश्न 10. भारतेंदु युग के साहित्य की कुछ प्रमुख विशेषताएं नीचे बताई गई हैं उनमें से एक सही नहीं है, बताइए।

(i) इनमें समाज सुधार को प्रोत्साहित किया गया।
(ii) इनमें धार्मिकता का विरोध किया गया।

www.neerajbooks.com